झंकार

लेखक

श्री सुदर्शन

प्रकाशक

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, गिरगांव, बम्बई

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, बम्बई नं० ४.

पहला संस्करण
अक्टूबर १९३९

मूल्य आठ आने

मुद्रक—
रघुनाथ दिपाजी देसाई,
न्यू भारत प्रिन्टिंग प्रेस,
गिरगाँव, बम्बई

भूमिका

गीतका गीत

आओ पाठक, गीत गाएँ।

दुनिया गीत-शाला है, देव गायक हैं। चाँद, सूरज, तारे, हँसते हुए फूल, मुस्कराते हुए मोती, बहते हुए झरने, नाचती हुई तितलियाँ, उड़ते हुए पंछी,—ये सब उस महान् कलाकारके गीत हैं।

आओ पाठक, गीत गाएँ।

दुनिया गीत-शाला है, असुर गायक हैं। राहु-केतु, कलह, अकाल, महामारी, रातका डर, मौतकी आहें, पापकी बरबादियाँ, लड़ाईके शोले,—ये सब उस नाटकीय असुरके गीत हैं।

आओ पाठक, गीत गाएँ।

मन गीत-शाला है, आत्मा गायक है। जीवन, आशा, संतोष, लड़ती हुई तदबीरें, सँवरती हुई तक़दीरें, जवानीकी गोदमें पला हुआ प्रेम, आत्मसमर्पणके सामने लेटा हुआ त्याग, कठिनाइयोंके पहाड़पर हिम्मतकी लाठी लेकर चढ़ती हुई कोशिशें,—ये सब इस वीर-योद्धाके गीत हैं।

आओ पाठक, गीत गाएँ।

मन गीत-शाला है, वासना गायक है; विषय-विकार, लोभ, क्रोध, अहंकार, टूटी हुई तदबीरें, बिगड़ी हुई तक़दीरें, हारे हुए हृदय, बदलेकी प्यास, चप्पेचप्पेपर ठोकरें खानेवाले संकल्प,—ये सब इस संसारके धिक्कारके गीत हैं।

आओ पाठक, ज़मीन-आसमान, आज-कल और पाप-पुण्यके गीत सुनें; और अपने एकांतका अँधेरा दूर करनेके लिए प्रेम, प्रकाश और पवित्रताके,—और जीवन, जगत और ज्योतिके गीत पसन्द करें।

माहीम, बम्बई
७ अक्टूबर १९३९

—सुदर्शन

निवेदन

जब किसी सहृदय व्यक्तिके मनपर हर्ष-विषाद-विस्मय आदिकी चोट लगती है, तब उससे एक गूँज,—एक झँकार उठती है। उस समय यदि इस गूँज या झंकारको शब्दोंका रूप दे दिया जाता है तो वह कविता बन जाती है; और यदि उस कविताको स्वरोंके पंख लग जाते हैं तो उन्हें गीत कहने लगते हैं। परन्तु जिस तरह हर एक जीव-शरीरके लिए पंख उपयुक्त नहीं होते, उसी तरह हरएक कविताके भी पंख नहीं लग सकते जिनसे वह आकाश-मण्डलमें ऊँची उड़ सके। इसके लिए सबसे अधिक आवश्यकता इस बातकी है कि गीतका कलेवर भारी-भरकम न होकर हलका-फुलका हो। उसमें गूँज और झंकार तो हो, परन्तु भावोंका बोझा और शब्दोंकी कठिनता न हो।

श्री सुदर्शनजीकी यह छोटी सी गीत-पुस्तक इसी प्रकारकी है, और जहाँतक हम जानते हैं हिन्दीमें बिल्कुल नई चीज़ है। भाषाकी सुगमताके कारण जनसाधारणमें इन गीतोंका प्रसार हो सकेगा। गीतोंकी भाषा गंगा-जमनी है जिसे आजकल 'हिन्दुस्तानी' कहा जा रहा है। इतनी विशेषता है कि इनमें व्रजभाषा आदिके शब्दोंका भी उपयोग कर लिया गया है जो पुराने गीतोंमें व्यवहृत होनेके कारण अत्यन्त लोकप्रिय हो रहे हैं।

इस पुस्तकके बहुतसे गीत सिनेमाकी तसवीरों और ग्रामोफ़ोनके रिकार्डोंमें भरे जा चुके हैं और लोगोंने उन्हें बहुत पसन्द किया है।

—प्रकाशक

सुदर्शनकी किताबें

कहानियाँ

पुष्प-लता	१)
चार कहानियाँ	२)
पनघट	१॥)
सुप्रभात	१॥)
सुदर्शन-सुधा	२)
सुदर्शन-सुमन	२)
तीर्थ-यात्रा	२)
परिवर्तन	॥)

नाटक—

अंजना	१=)
भाग्य-चक्र	१)
आनरेरी मॅजिस्ट्रेट	॥=)

बाल-साहित्य

राजकुमार सागर	॥)
फूलवती	॥)
सोहराब रुस्तम	॥=)
सात कहानियाँ	।–)

संकलन

गल्प-मंजरी	२)
हिंदुस्तानी गद्य-पद्यसंग्रह	१)

गीत-सूची

झंकार

प्रार्थना

नाथ, अनाथनके रखवार ।

कबसे तुझपर लगी नजरिया—
कब तक करूँ पुकार ?
नाथ, अनाथनके रखवार ।

देख चुका सब दुनिया तेरी,
देख चुका सब हेराफेरी,
सब अपने अपने मतलबके—
कौन किसीका यार ?
नाथ, अनाथनके रखवार ।

क्यों बन्देसे बेपरवाही ?
क्यों नहिं बनता आप सहाई ?

सब तुझको बदनाम करेंगे—
अपना आप विचार !
नाथ अनाथनके रखवार ।

उसके श्रीचरणोंमें

बसो रे मोरे नयननमें चित-चोर !

यह नयना तोहे ऐसे खोजें
जैसे चंद्र चकोर
बसो रे मोरे नयननमें चित-चोर !

आठ पहर मन कीनो डेरा,
मनमें बीते साँझ-सबेरा ।
डाह करत हैं नयन-पड़ौसी,
उनके घर दिन-रैन अँधेरा ।

आओ इधर भी मनके वासी !
अरज करूँ कर जोर
बसो रे मोरे नयननमें चित-चोर !

अंधेकी लाठी

अंधेकी लाठी तू ही है, तू ही जीवन-उजियारा है ।
तू ही मेरा रखवारा है, तेरा ही एक सहारा है ।
अंधेकी०

दुख-दर्दकी गठड़ी सिरपर है, पग-पगपर गिरनेका डर है,
परमेश्वर, अब पत राख तुही, तू ही पत राखनहारा है ।
अंधेकी०

जिनपर आशा थी छोड़ गए, बालूके घरौंदे फोड़ गए,
मुँह मोड़ गए, मन तोड़ गए, अब जगमें कौन हमारा है ?
अंधेकी०

धरती-माता

धरती-माताको नमस्कार !

जो धरती हम सबकी माता,
जो दुनियाकी जीवनदाता,
उसपर तन-मन-धन निसार—
धरती-माताको०

जिस धरतीकी शोभा न्यारी,
हर क्यारी केसरकी क्यारी,
धूलसे उपजे चमत्कार—
धरती-माताको०

जिस धरतीका चाँद पुजारी,
जिसपर सूरज नित बलिहारी,

जिसकी महमा अपरम्पार—
धरती-माताको०

मेघ जहाँ अंमृत बरसावे,
खेतनमें सोना लहरावे,
पल पल छिन छिन बार बार—
धरती-माताको०

वसंत

किसने यह सब खेल रचाया ?
किसने यह सब साज सजाया ?
अपने आप सभी-कुछ करके—
अपना आप छुपाया ।
किसने०

कोमल कोमल प्यारे पौधे !
धान-पान मतवारे पौधे !
इनके ऊपर आकर छिड़की—
रंग-रूपकी माया ।
किसने०

अंधेरेमें सोते थे यह,
बिलकुल बेसुध होते थे यह,

नींद-पुरीके मदमातोंको—
नींदसे आन जगाया।
किसने०

हरा भरा गुलज़ार खिला है,
सरसोंका संसार खिला है,
देख देख मनमें सुख होवै—
अँखियन नूर समाया।
किसने०

माटी

माटी धन-धान लुटाती है ।
अपने लाखों
हाथोंसे,
धन-धान लुटाती है ।

धरतीके नीचे पहले जलसे ख़ूब नहाती है,
फिर निखर निखरकर अपना नौ-रस रूप सजाती है ।
मगर जब बाहर आती है,
लजाती है, घबराती है,
हवासे भी डर जाती है
दो दिन पीछे
दानी बनकर
चाँदी सोनेका अपना वरदान लुटाती है ।
माटी धन-धान लुटाती है ।

एक ग्राम-सुधारक

मेरे पीछे पीछे चले आओ तुम !

बुलाती है धरती हमें गाँओंकी,
बुलाती हैं ख़ुशियाँ घनी छाओंकी,
उठो गर्द झाड़ो ज़रा पाँओंकी,
मेरे पीछे पीछे चले आओ तुम !

शराफ़त सदा जागती है वहाँ,
ज़मीनोंमें सोता है सोना जहाँ,
तुम्हें ऐसी बस्ती मिलेगी कहाँ ?
मेरे पीछे पीछे चले आओ तुम !

माया

माया सौ सौ रूप दिखावे।

नया नया नित नजर-नजारा
नए नए नाच नचावे।
माया सौ सौ रूप दिखावे।

कहींपै बनकर खेल-खिलौना
बालकको भरमावे।
कहींपै बन जावे ख़ुद बालक
मात-पिता मन-भावे।
माया सौ सौ रूप दिखावे।

कहीं बने यह घरकी तिरिया,
प्रेम-सुधा बरसावे।

कहीं बने यह खोटी नारी
घर घर आग लगावे ।
माया सौ सौ रूप दिखावे ।

कहीं दौलत कहीं रूप जवानी,
कहीं तृष्णा ललचावे ।
सुन्दर छलसे बचे वही
जो हरिपर टेक लगावे ।
माया सौ सौ रूप दिखावे ।

हुशियार

हुशियार !

हुशियार !

दूर देशसे मंगलकारी

आती है झंकार

हुशियार !

हुशियार !

सँभल सँभल कर चल मन जीवन-मारग है दुशवार ।

कदम कदमपर

भेस बदलकर

बैठे चोर चकार

अचानक तुझको आ लेंगे,

डरा लेंगे—धमका लेंगे,

तू तकता
रह जाएगा
वह माल उड़ा लेंगे।
दुनिया सपना
कोई न अपना
मतलबका संसार।
हुशियार !
हुशियार !

फिसलन घाटी

मन सँभल सँभल कर बढ़ना दुनिया फिसलन घाटी है ।

इस घाटीमें पग पगपर डर
गाफ़िल बन्दे सोच-समझकर
ऊँचा-नीचा मग रपटीला देख देखकर चढ़ना ।
दुनिया फिसलन घाटी है ।

इस घाटीमें ज्ञानी फिसले,
योगी ध्यानी मानी फिसले,
मायाकी इस चकाचौंधको, आँख खोलकर पढ़ना ।
दुनिया फिसलन घाटी है ।

मन, सँभल सँभल कर बढ़ना दुनिया फिसलन घाटी है ।

दुनिया एक कहानी

यह दुनिया एक कहानी है ।

परमेश्वर दुख सुख चुनता है,
दुनियाकी कहानी बुनता है,
नर सुनता है, सर धुनता है,
ऐसी इसमें दिलचस्पी है, ऐसी रंगीन बयानी है,
यह दुनिया०

कहीं धनपर लोभ लपकता है,
कहीं मनका मोह छलकता है,
कहीं प्यासा प्रेम भटकता है,
जो इन फंदोंसे बच निकले, वह ज्ञानी है वह ध्यानी है
यह दुनिया०

मनकी आँखें

बाबा ! मनकी आँखें खोल ।

दुनिया क्या है खेल-तमाशा,
चार दिनोंकी झूठी आशा,
पलमें तोला—पलमें माशा,
ज्ञान-तराजू लेके हाथमें तोल सके तो तोल ।
बाबा मनकी०

झूठे हैं यह दुनियावाले,
तनके उजले मनके काले,
इनसे अपना आप बचा ले,
रीत कहाँकी, प्रीत कहाँकी, कैसा प्रेम-किलोल ?
बाबा मनकी०

नींदमें माल गँवा बैठेगा,
मनकी जोत बुझा बैठेगा,

अपना आप लुटा बैठेगा,
दो दिनकी दुनियामें प्यारे पल पल है अनमोल !
बाबा मनकी०

मतलबकी सब दुनियादारी,
मतलबके सारे संसारी,
तेरा जगमें को हितकारी ?
तन-मनका सब ज़ोर लगाकर नाम हरीका बोल ।
बाबा मनकी०

प्रेम-कहानी

प्रेम-कहानी सखी ! सुनत सुहावे ।

चोर चुरावे माल ख़ज़ाना
पिया नैननकी निंदिया चुरावे ।
प्रेम-कहानी०

डाकू चलावे लोहेका भाला
पिया नज़रियाके तीर चलावे ।
प्रेम-कहानी०

प्रीत-नगरकी रीत निराली
जो मर जावे, अमर हो जावे ।
प्रेम-कहानी०

चाँद

मोरा चाँद मोरे घर आया, मोरा चाँद मोरे घर आया ।

आज मोरे घर-बार उजाला,
आज मोरे संसार उजाला,
आज मोरे मनमोहन प्यारे, सुन्दर रूप दिखाया ।
मोरा चाँद०

कोई पियाको खाट बिठावे,
कोई रंगीला पलंग बिछावे,
मैंने अपने मनका आँचल पग पगपर फैलाया ।
मोरा चाँद०

नैननका अँधकार मिटाकर
छैल छबीला छबि दिखलाकर
जनम जनमका प्रेम पुराना मनमें आन जगाया ।
मोरा चाँद०

शिकायत

दिल लगाके पिया मोहे भूल गए ।

सुपना हो गईं पीकी बतियाँ,
बीत गईं रंग-रसकी रतियाँ,
प्रेम-पुरीकी प्रेम-कहानी—
सुनाके पिया मोहे भूल गए ।
दिल लगाके पिया मोहे भूल गए ।

जिस नगरीकी रीत खरी थी,
हार बुरी थी, जीत खरी थी,
उस नगरीकी कुंज-गलीमें—
बुलाके पिया मोहे भूल गए ।
दिल लगाके०

यौवन-प्रभात

मैं मनकी बात बताऊँ !
क्या क्या बात उठत मन मोरे सब कहकर समझाऊँ ।
मैं मनकी०

फूल बनूँ, फूलन संग महकूँ,
पंछी बनकर गाऊँ ।
हरिणी बनकर बन बन खेलूँ,
घुँघरू पैर बँधाऊँ ।
मैं मनकी०

परम पुनीत प्रभात बनूँ मैं,
जागूँ जगत जगाऊँ ।
रंग-बिरंगी तितली बनकर,
नैनन नाच नचाऊँ ।
मैं मनकी०

चाँद बनूँ आकाश सजाऊ,
तारे रोज जलाऊँ ।
लहर बनूँ, पल पल लहराऊँ,
बादल बन जग छाऊँ ।
मैं मनकी०

तू बादलका रूप बने मैं,
चातकरूप धराऊँ ।
सूखा प्यासा खेत बनूँ मैं,
पल पल तुझे बुलाऊँ ।
मैं मनकी०

मीठा गीत बनूँ झरनेका,
हरदम सुनत सुहाऊँ ।
आशाका सुपना बनकर, मन
टूटे जोड़ दिखाऊँ ।
मैं मनकी०

नवयुग

जागरी सजनी ! नवयुग आया ।

बीत गई सब बात पुरानी,
नया ज़माना, नई कहानी ।
नई डगरिया,
नई खबरिया,
नए नैननकी—
नई नजरिया ।
नई आशने नए दिलोंमें
एक नया संसार बसाया । जागरी सजनी०

फूल खिले फुलवारी जागी,
मनकी दुनिया सारी जागी ।
मैं भी जागी,
तू भी जागी,

कोथलकी कू-

कू भी जागी।

अंमृत रुतके खेल तमाशे

देखके अँखियन नूर समाया। जागरी सजनी०

हारा हुआ हृदय

अब मैं काह करूँ, कित जाऊँ ?

छूट गया सब साथ सहारा,
अपने भी कर गए किनारा,
इक बाज़ीमें सब कुछ हारा,
आशा हारी
हिम्मत हारी
अब क्या दाव लगाऊँ ? अब मैं काह०—

जो पौधा सींचा, मुरझाया,
टूट गया जो महल बनाया,
बुझ गया जो भी दीप जलाया,
मन अँधियारा
जग अँधियारा
जोत कहाँसे पाऊँ ? अब मैं काह०—

आशाकी आवाज़

पगले, काहे होत अधीर ?

काहे कलेजे सहम समावे
अँखियन झाँके नीर । पगले काहे०—

सुपने बिखर गए गर तेरे
हो गए तेरे गीत अँधेरे
मनकी जोत जला ले मनमें
जाग उठे तकदीर । पगले काहे०—

बेशक तूने सब कुछ खोया
जो कुछ बोया, निष्फल बोया
हिम्मतकी फिर बाँध कमरिया
फिर जीते तद्बीर । पगले काहे०—

प्यारकी बाज़ी

ारकी बाज़ी कोई कोई खेले ।

प्यारकी बाज़ी रंग-रंगीली,

दाव रसीले, चाल नशीली ।

रंग जमा दे,

सुध बिसरा दे,

तनसे मनसे दूर भगा दे,

ानम जनमके सकल झमेले ।

प्यारकी०—

प्यारकी बाज़ी जिसने खेली,

खुल गई उसपर जगत-पहेली ।

नाम उसीका,

काम उसीका,

दुनियामें अंजाम उसीका ।

चरनन लोटैं बाघ बघेले ।

प्यारकी०—

मीठी मुरली

मीठी मुरलिया कौन बजावे ?

मैं बौरी कुछ जानत नाहीं
कौन रसीला आ मनमाहीं ?
अजब अजब बतियाँ समझावे ।
मीठी मुरलिया०—

मायाने मुझको भरमाया,
मनको कैसा रोग लगाया ?
देखत देखत मार गिरावे ।
मीठी मुरलिया०—

तेरा कौन है ?

जगतमें कौन किसीका मीत ?
जग झूठा, झूठे जगवाले, झूठी जगकी प्रीत।
जगतमें कौन किसीका मीत ?

मृगतृष्णामें फँसकर मूरख, भूला नीत-अनीत,
देखत सब, समझत कछु नाहीं, गई उमरिया बीत।
जगतमें कौन किसीका मीत ?

प्रीतकी महमा सब कोई जानै, सब कोई गावै गीत,
पर जो प्रीत करे दुख पावै, यह अचरजकी रीत।
जगतमें कौन किसीका मीत ?

सुपनोंका राजा

मोरे सुपनोंके राजा मोरे घर आ जा।

मोरे घरकी एक निशानी,
द्वार खड़ी है प्रेम-दिवानी,
नैनन झलके कसक-कहानी,
नैननमें समा जा, मोरे घर आ जा।
मोरे सुपनोंके राजा मोरे घर आ जा।

छाई उदासी प्रेम-डगरमें,
मन घबरावे सूने घरमें,
हूक उठै दिन रात जिगरमें,
हूक मिटा जा, मोरे घर आ जा।
मोरे सुपनोंके राजा, मोरे घर आ जा।

मोहे डर आवे

पिया घरमें अकेली मोहे डर आवे ।

घर सूना, सब दुनिया सूनी
बेबस नार अकेली ।
काह करूँ ? कछु सूझै नाहीं
जीवन एक पहेली ।
पिया घरमें अकेली, मोहे डर आवे ।

जिन सखियनके साजन घर हैं
उनका साँझ-सवेरा ।
मोरा साजन दूर बसे है,
मोरे घर अंधेरा ।
पिया घरमें अकेली, मोहे डर आवे ।

पर-तिरियाका प्यार कपट छल
धोखा है दो पलका ।
बाहर चमक सुनहरी, भीतर
टुकड़ा है पीतलका ।
पिया घरमें अकेली, मोहे डर आवे ।

उस पार

सजनी, आओ चलें उसपार ।

काह करूँ मन माने नाहीं, दौड़े वारंवार ।
सजनी०—

वह दुनिया अलबेली-सी है,
उसकी रीत अनेली-सी है,
बल्कि एक पहेली-सी है,

जो कोई समझे
जो कोई बूझे,
पहुँचे अगम दुवार ।
सजनी०—

पर्वत ऊँचा, दरिया गह्रा,
क़दम क़दमपर जंगी पह्रा,
पार उतर कर देश सुनह्रा,

उसके अंदर
छुपकर बैठा,
मोह्न राजकुमार ।
सजनी०—

सजनी ! आओ चलें उसपार ।

प्रेमकी नैया

मोरी प्रेमकी नैया चली जलमें ।

प्रेमका सागर, प्रेमकी नैया,
प्रेम मुसाफ़िर, प्रेम खिवैया,
प्रभु बिन मेरा कौन रखैया?
सोच करे तू क्यों अति भोरी,
यह नैया कभी न गली जलमें ।
मोरी प्रेमकी नैया चली जलमें ।

चार तरफ़ छाया अँधियारा,
सूझे नाहीं दूर किनारा,
थर थर काँपे मन मतवारा,
क्यों मनकी इतनी कमज़ोरी?
यह नैया हमेशा पली जलमें ।
मोरी प्रेमकी नैया चली जलमें ।

आज और कल

मन, सोच ज़रा कल क्या होगा ?

आज है सीता राज-भवनमें ।
ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ हैं मनमें ।
कल वही कोमल राजदुलारी,
नंगे-पांव फिरेगी बनमें ।
गाफ़िल बन्दे इससे बढ़कर—
किसमतका छल क्या होगा ?

मन, सोच ज़रा कल क्या होगा ?

चोर

सखी, जाग मेरे घर चोर आया !

शेर बघेले बनके पहरे,
लाज शरम मेरे मनके पहरे,

इनपै छिड़ककर मोहनमाया—

मेरे नैननकी नजर लुभावनेको,
मेरे चित्तका चैन चुरावनेको,
मेरी रातकी नींद उड़ावनेको,

इस ठौर आया, उस ठौर आया।
सखी, जाग मेरे घर०

फूल-काँटा

इक मनका कोमल राजा था,
इक मनकी कोमल रानी थी।
उनकी दुनिया
मीठे सुपनोंकी प्रेम-कहानी थी।
इक मनका कोमल०—

इक दिन इक सौदागर लाया
एक निराला पंछी।
सुन्दर रूप अनूप मनोहर
गानेवाला पंछी।

पंछी राजाके मन भाया
राजा खुश खुश घर ले आया।
क़ुदरतने रानीके मनमें और ख़याल जगाया।

अँखियन भर भर आवे नीर,
हर दम उठे कलेजे पीर,

मनको कौन बँधावे धीर ?

रानीका कुछ दोष नहीं था—
प्रेमकी कारस्तानी थी ।

इक मनका कोमल राजा था,
इक मनकी कोमल रानी थी ।

रंगीली दुनिया

दुनिया रंग रँगीली, बाबा !
दुनिया रंग रंगीली ।

यह दुनिया इक सुन्दर बगिया
शोभा इसकी न्यारी है ।
हर डारीपर जादू छाया
हर डाली मतवारी है ।

अद्भुत पंछी
फूल मनोहर
कली कली चटकीली बाबा !
दुनिया रंग रँगीली ।

कदम कदमपर आशा अपना
रूप अनूप दिखाती है ।

बिगड़े काज बनाती है
धीरजके गीत सुनाती है ।

इसका सुर
मिसरीसे मीठा
इसकी तान रसीली बाबा !
दुनिया रंग रँगीली ।

दुखकी नदिया, जीवन नैया,
आशाके पतवार लगे ।
ओ नैयाको खेनेवाले,
नैया तेरी पार लगे ।

पार बसत है
देस सुनहरा ।
किसमत छैल छबीली बाबा !
दुनिया रंग रँगीली ।

अपनी अपनी आँख

१

दुखकी कहानी हमारी उमरिया ।

जीवन जलता दीप पवनमें,
पल छिनमें बुझ जाएगा ।
रेतके ऊपर रेतका घर है,
कब तक ख़ैर मनाएगा ।
जब तक जीना
तब तक रोना
ऐसे ही बीतेगी सारी उमरिया ।
दुखकी कहानी हमारी उमरिया ।

२

सुखका तराना हमारी उमरिया ।

चाँदीकी गोरी किरणें जब
चाँद लुटाने आता है ।
सबसे पहले टूटे घरमें,
अपनी जोत जलाता है ।
दो दिनकी
दुनियामें जीकर
मौजें मनाना हमारी उमरिया ।
सुखका तराना हमारी उमरिया ।

३

उठती जवानी हमारी उमरिया ।

प्यार भरे मदमाते नैना
कुछ संदेस सुनाते हैं ।
जोबनके सुपने मनमें,
मीठी-सी आग लगाते हैं ।
प्यारका चौपड़
मनके पाँसे

ऐसी कहानी हमारी उमरिया
उठती जवानी हमारी उमरिया।

४

दुनिया सफ़र है हमारा तुम्हारा।

राह अजानी, रात अँधेरी
जुगुनू चमके कभी कभी।
बढ़ता चल मनचले मुसाफ़िर
मंज़िल तेरी दूर अभी।
तू ही अपना
आप सहाई
तेरा ही धीरज है तेरा सहारा।
दुनिया सफ़र है हमारा तुम्हारा।

सिपाही

जीत लिया मैदान तूने
जीत लिया मैदान ।

लड़ता चल तू
बढ़ता चल तू
साथ तेरे भगवान,
तूने जीत लिया मैदान ।

बेशक वीर-बहादुर है तू,
पहली लड़ाई जीत गया ।
जो काला दिन आया था वह,
हँसते हँसते बीत गया ।

रोनेका भी दिन
जब आए ।

मैल न तेरे मुँह-

पर पाए।

जय जय सारी दुनिया बोले होकर एक ज़बान।

तूने जीत लिया मैदान।

बेशक हार बुरी है लेकिन,

हारसे बढ़कर जीत बुरी।

जीत करे नरको अंधा यह

जीतकी कैसी रीत बुरी!

रीत अगर यह

तोड़ सके तू,

दरियाका रुख़

मोड़ सके तू,

फिर तुझको किसकी परवा है जीत तेरी हर आन।

तूने जीत लिया मैदान।

बीते हुए दिन

ऐ काश ! लौट आए गुज़रा हुआ ज़माना ।

जब थे शबाब[1]के दिन,
जब थी हसीन[2] दुनिया ।
ख़ुशियाँ लुटा रही थी,
जब नाज़नीन[3] दुनिया ।
वह दिन कहाँ हैं बाक़ी,
बाक़ी है अब फ़साना[4] ।
ऐ काश ! लौट आए
गुज़रा हुआ ज़माना ।

आँखोंमें फिर रही हैं,
वह पुरबहार[5] रातें ।

---

१ जवानी । २ सुन्दर । ३ सुन्दरी । ४ कहानी । ५ बसन्त-पूर्ण ।

अख़्तर-शुमारियोंकी[1],
वह बेक़रार रातें ।
कानोंमें गूँजता है,
अब भी वही तराना ।
ऐ काश ! लौट आए
गुज़रा हुआ ज़माना ।

ऐ काश लौट आए गुज़रा हुआ ज़माना ।

---

१ तारे गिननेके ।

अँधेरी रातका मुसाफ़िर

मूरख मन, होवत क्यों हैरान ?

सच-मुच तेरी—रात अँधेरी,
संकटमें हैं प्रान ।
बाँध कमरिया—ढूँढ़ डगरिया
कृपा करे भगवान ।
मूरख मन, होवत क्यों हैरान ?

आनँद नगरिया दूर नहीं अब काहेको घबरावत है ?
भगवानके घरसे तेरे लिए इक सुख-संदेसा आवत है ।
मूरख मन, होवत क्यों हैरान ?

सुख-दुख दोनों—एक बराबर
दो दिनके मेहमान ।
वह भी देखा—यह भी देख ले
दोनोंको पहचान ।
मूरख मन, होवत क्यों हैरान ?

अपूरब माया

प्रेम अपूरब माया जगतमें ।

प्रेम बिना यह दुनिया क्या थी ?
न कोई संगी, न कोई साथी ।
प्रेमने आन मिलाया जगतमें । प्रेम अपूरब०—

प्रेम बिना सब जीवन फीका,
कौन किसीकी ? कौन किसीका ?
प्रेमने साज सजाया जगतमें । प्रेम अपूरब०—

कौन-सी चीज़ है सबसे बढ़कर ?
सबसे सुन्दर ? सबसे सुखकर ?
प्रेमकी शीतल छाया जगतमें । प्रेम अपूरब०—

कोयलसे

कोयलिया, क्यों बैठी चुपचाप ?

क्यों बगियापर डार उदासी, रोवत अपने आप ?
कोयलिया०—

फूल खिले फुलवारी फूले
क़दम क़दमपर सुधबुध भूले
जोबनके मदमाते जुगमें गुमसुम रहना पाप
कोयलिया०—

कूक सुना दे—हूक जगा दे,
तन मनकी सब भूक मिटा दे,
फूलोंकी दुनियाका सजनी, यह सुमरन यह जाप !
कोयलिया०—

रोता क्यों है ?

क्यों रोता है कुछ सोच ज़रा ?
कुछ सोच ज़रा क्यों रोता है ?
जो क़िसमतमें है मिलता है, जो क़िसमतमें है होता है ।
क्यों रोता है०—

जिसने दुनियामें कहर किया
उसको दुनियामें चैन कहाँ ?
क्यों अमरसकी उम्मीद करे जो विषकी खेती बोता है ।
क्यों रोता है०—

गर तूने किसीका दिल तोड़ा
कोई तेरा भी दिल तोड़ेगा ।
इस हाथ करो, उस हाथ मिले, यह दुनियाका समझोता है ।
क्यों रोता है०—

दुखिया सब संसार

सजनी, दुखिया सब संसार ।

दुनिया नदिया जीवन नैया आशाके पतवार ।
मनके भरोसे चल निकले थे आन फँसे मझधार ।
सजनी, दुखिया सब संसार ।

क्या दुनियाके खेल-तमाशे, क्या है ऐश-बहार ?
होंठोंपर हैं गीत ख़ुशीके, मनमें हाहाकार ।
सजनी, दुखिया सब संसार ।

दो दिनकी यह झूठी दुनिया दो दिनका घरबार ।
एक प्रभूका सुमरन कर ले, संकट टारनहार ।
सजनी, दुखिया सब संसार ।

पुकार

दुखियोंकी कौन पुकार सुने !

नित रंग-रलियोंसे काम तुम्हें,
जगके सारे आराम तुम्हें ।
जो दुनिया है दुख-दर्द हमें,
वह दुनिया है सुख-धाम तुम्हें ।
जो लोग हमें ठुकराते हैं,
वह करते हैं परनाम तुम्हें ।

खुश रहते हो,
कोई पूछे तो यह कहते हो,
क्यों आहें सुने ग़रीबोंकी जो सोनेकी झंकार सुने ।
दुखियोंकी कौन पुकार सुने !

तुम शिवको भोग लगाते हो,
फल फूल अनाज चढ़ाते हो ।

यह चीज़ें हैं जिन दुखियोंकी,
उन दुखियोंको तरसाते हो।
वह द्वार तुम्हारे आते हैं,
तुम उनको मार भगाते हो।

शिव रोता है,
इससे उसको दुख होता है,
यह अलख जगा दो घर घरमें, यह बात सभी संसार सुने।
दुखियोंकी कौन पुकार सुने!

शराबी

कैसी तेरी रीत
शराबी कैसी तेरी रीत !

कैसी तेरी रीत शराबी,
उलटी तेरी प्रीत शराबी।
अपने घर-भरके दुशमनको—
समझे अपना मीत शराबी,
कैसी तेरी रीत !

जिसे कहे तू लाल परी है,
वह पानीमें आग भरी है।
इतनी छोटी बात न जानी
गई उमरिया बीत शराबी,
कैसी तेरी रीत !

पी पी उमर गुज़ारी तूने,
जीवन-बाज़ी हारी तूने।
सोच-समझके लेकर पाँसे
हारी बाज़ी जीत शराबी,
कैसी तेरी रीत!

ओ मतवाले सोच ज़रा तू,
मनमें कर संकोच ज़रा तू।
तेरे घरको आग लगी है—
गाता है तू गीत शराबी,
कैसी तेरी रीत!

जाग उठ दूर खुमारी कर दे,
दूर शराब हत्यारी कर दे।
अपना मन कर अपने बसमें—
यह मरदोंकी रीत शराबी,
कैसी तेरी रीत,

शराबी कैसी तेरी रीत!

जवानी दीवानी

क्या करता है ?
क्यों डरता है ?
उठ अपना रंग जमा ले !

चाँद चढ़े सब दुनिया देखे,
तू भी चाँद चढ़ा ले ।
उठ अपने अंधेरे घरमें,
अपनी जोत जला ले,
बात बना ले ।
उठ अपना रंग जमा ले !

जोबनकी नित लूट बहारें,
भर भर पीले प्याले ।
कलकी बात उठा रख कलपर,
आजकी खैर मना ले

सुध बिसरा ले।
उठ अपना रंग जमा ले!

आँखोंकी चिनगारी लेकर,
मनमें आग लगा ले,
हाथोंसे घर फूँक तमाशा
दुनियाको दिखला ले,
ओ मतवाले।
उठ अपना रंग जमा ले!

रंग-बहार

खा ले, पी ले, हँसकर जी ले,
दुनिया रंग-बहार।

गीत खुशीके गा ले प्यारे,
मनकी मौज मना ले प्यारे,
ऐसा रंग जमा ले प्यारे,
तू नाचे, तेरा मन नाचे
नाचे सब संसार।
खा ले, पी ले, हँसकर जी ले,
दुनिया रंग-बहार।

खुशियोंके बाज़ार कहींपर,
रँग रसकी भरमार कहींपर,
भौंरोंकी गुंजार कहींपर,
कदम कदमपर खिला हुआ है

एक नया गुलज़ार ।
खा ले, पी ले, हँसकर जी ले,
दुनिया रंग-बहार ।

धरम करम बतलाते हैं जो,
दिलका भरम जगाते हैं जो,
तुझको आन डराते हैं जो,
उनकी बातें क्यों सुनता है
उनको दे दुतकार ।
खा ले, पी ले, हँसकर जी ले,
दुनिया रंग-बहार ।

समाप्त